

अभिनव कदम - 20

क्योंकि आदत है उसे
किसी भी जीवन लय को
बाद के धमाकों से
चिथड़ा कर देने की,
क्योंकि कुशलता पा ली है उसने
भोली आस्थाओं को
बीभत्स बनाने की
लोकतंत्र मानवाधिकार
के दोहरे प्रयोग की।

अभिनव कदम - 20

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा
के
सहयोग से प्रकाशित

संपादक : जयप्रकाश धूमकेतु

अभिनव कदम - 20

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा
के
सहयोग से प्रकाशित

बच्चन सिंह, का अरविन्द कुमार सिंह, विश्वनाथ प्रताप सिंह, लवलीन, प्रभा खेतान, बाबू राव बागुल, मोती बी.ए., रामचन्द्र तिवारी, बाबा मनजीत, वेषुगोपाल, इन्दु जैन, त्रिभुवन सिंह, विजयपाल सिंह, सिद्धनाथ कुमार, फिज़ा इब्ने फैज़ी को अभिनव कदम की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

अभिनव कदम

प्रधान संपादक : चन्द्रदेव राय

संपादक : जयप्रकाश धूमकेतु

संपादन सहयोग : शिवकुमार पराग

संजय श्रीवास्तव

कमलेश सिंह

प्रसार व्यवस्था : श्रीमती राजेश्वरी

कला संयोजन : एस. के. दत्ता

संपर्क :

‘प्रकाश निकुंज’

223, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा

मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)-275101

फोन : 0547-2223113, मोबाइल : 09415246755, 09415241755

ई-मेल : patrika.abhinavkadam@gmail.co

— सहयोग राशि —

यह अंक : 50.00

संस्थाओं के लिए : 100.00

आजीवन सदस्यता : 2000.00

प्रकाशक : साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, ‘मंथन’ मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)

अक्षर संयोजन : श्वेता जॉब्स, बहादुरगंज, इलाहाबाद ■ 9451451587

प्रिंटिंग : पुष्पी आफसेट, बाई का बाग, इलाहाबाद (उ.प्र.)

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रम

1. संपादकीय/1
2. जो यूँ होता तो क्या होता; गोपाल कृष्ण की लम्बी कविता/7
3. देश के विकास को समर्पित हरिओम की कुछ कविताएँ/15

लेख

4. सारी लपटों का रंग लाल होता है—कुमार विमल/20
5. दिनकर के काव्य में प्रतिरोध के स्वर—पूनम सिंह/25
6. वाजिद, एक सिद्ध कवि की खोज—सुभाष राय/31
7. नदी के तट पर कवियों का शहर—भरत प्रसाद/37
8. भाषिक सृजनशीलता और शिवप्रसाद सिंह की कहानियाँ—गोपाल कृष्ण तिवारी/47

कविताएँ

9. दिनेश कुशवाह की पाँच कविताएँ/61
10. श्री प्रकाश शुक्ल की पाँच कविताएँ/70
11. जितेन्द्र श्रीवास्तव की पाँच कविताएँ/81

लेख

12. बौलीबात के काव्यात्मक निहितार्थ—परमानन्द श्रीवास्तव/94
13. कविता में स्मृति, समाज और समय—रेवती रमण/99
14. दिनेश कुशवाह के बहाने हिन्दी कविता पर एक पुनर्विचार
—रामप्रकाश कुशवाहा/105
15. आलोचना का परिप्रेक्ष्य—रघुवंशमणि/118
16. कला और विचार धारा—सुरेश पण्डित/122
17. घर का आखिरी कमरा-उपन्यास अंश—प्रियदर्शन मालवीय/128
18. विश्वमंच पर हिन्दी—शिखा तिवारी/161
19. भीष्म साहनी के उपन्यासों में कालबोध—रामचन्द्र/169
20. आधुनिकता और भोजपुरी साहित्य—जितेन्द्रनाथ मिश्र/173
21. साहित्य, आस्वाद और आकर्षण—अनिलकुमार सिंह सेंगर/183

कविताएँ

22. सुधांशु कुमार मालवीय की तीन कविताएँ/185
23. आतंकवाद पर ऋषभदेव शर्मा की दस कविताएँ/189
24. वेणुगोपाल, आदिकवि, 1942-2008—असद जैदी/196
25. रीता हजेला की पाँच कविताएँ/198
26. केशवशरण की पाँच कविताएँ/203

कहानियाँ

27. मिड डे मील—अल्पना मिश्र/206
28. सिरीकिसन का कुनबा—हरपाल सिंह 'अरुष'/226

साक्षात्कार

29. बालशौरी रेड्डी से शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी की बातचीत/233
30. कृष्ण बिहारी मिश्र से सत्येन्द्र पाण्डेय की बातचीत/237

अनुवाद

31. मैं लिखना कैसे सीखा? मैक्सिम गोर्की, अनुवाद—गुलाबचन्द्र विश्वकर्मा/242

रेखाचित्र

32. आओ खेले व्यंग्य-व्यंग्य—राजकुमार सचान 'होरी'/244

कविताएँ

33. विनय मिश्र की गज़लें/246
34. इन्दु श्रीवास्तव की गज़लें/252
35. उगते नक्षत्र का गीत—रामेश्वर/257
36. जमूरा—चन्द्रकान्त/261
37. नमिता सत्येन की दो कविताएँ/262
38. गाँव में शहर—उद्भव मिश्र/263
39. बदलते गाँव का गीत—सरोज पाण्डेय/264

समीक्षा

40. रचनाशीलता को ठेंगा दिखाती रूपतिल्ली की कथा—श्रीराम त्रिपाठी/265
41. मैं हूँ तुम्हारी कविता-संक्षिप्त विमर्श—अनिल सिन्हा/272
42. बहुकोणीय संघर्षगाथा है : एक अंतहीन तलाश—दीनबन्ध तिवारी/275
43. राग-विराग के बीच सुरेन्द्र काले की दुनिया—परमानन्द श्रीवास्तव/279
44. पठनीयता के संकट को दर किनार करती कविताएँ—लालसालाल तरंग/286
45. कुछ हाले फिराक़: संजय राय/290
46. शावणू के लिए जगह बनाती कृति: संजय राय/294

रपट

47. गोदरगाँवा में लोग आ चुके हैं—अनिल पतंग/299
48. बड़े बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले—प्रमोद कुमार वरनवाल/304
49. केदार सम्मान 2007 का आयोजन—योगेश श्रीवास्तव/307
50. जोकहरा में अखिल भारतीय कथा समारोह—जयप्रकाश धूमकेतु/309
51. रचनाकारों के सम्पर्क सूत्र/315

‘इतिहास के अन्त’ से पूँजीवाद के अन्त की शुरुआत

“1991 में फूकोयामा ने इतिहास के अन्त और विचारधारा के अन्त की घोषणा कर दी और यहाँ तक कहा कि अमरीकी नेतृत्व में पूँजीवादी प्रणाली ही दुनिया का अन्तिम सत्य है।” फूकोयामा की सन्दर्भित वैचारिकी बीसवीं सदी के अन्त में यानी अन्तिम दशक के प्रथम चरण में उद्घोषित की गई जब साम्यवादी सोवियत रूस का पतन हो चुका था। दो ध्रुवों में बँटी हुई दुनिया एक ध्रुवीय हो चुकी थी। पूँजीवादी साम्राज्यवाद ने दुनिया को ढेर सारे रंगीन सपने परोसते हुए इक्कीसवीं सदी में प्रवेश का ऐलान कर दिया। पूरी गर्मजोशी के साथ पूरी दुनिया ने सूचनाक्रान्ति के कन्धों पर सवार होकर इक्कीसवीं सदी का स्वागत करते हुए जश्न मनाया।

आज हकीकत सामने है। नई शदी के पहले दशक में दहशतगर्दी ने दुनिया के अलग-अलग मुल्कों में अपना बर्बरता पूर्ण असर दिखाना शुरू कर दिया। पश्चिमी दुनिया की अत्याधुनिक सेनाओं ने अफगानिस्तान और इराक पर बर्बरतापूर्ण बमबारी कर अपने को स्थापित किया। इन दोनों मुल्कों में लोकतन्त्र और मानवाधिकार की स्थापना के बहाने से अमरीका ने कठपुतली सरकारों का गठन कराकर अपनी पीठ खु-ब-खुद थपथपाना शुरू किया। और फिर बुश की विदाई और अश्वेत राष्ट्रपति ओबामा की ताजपोशी कर अमरीकी जनता ने अपना निर्णय सुना दिया। 2008 में पूरी दुनिया आर्थिक मन्दी का शिकार हुई हैं। मन्दी की सबसे अधिक मार स. रा. अमरीका और ग्रेटब्रिटेन पर पड़ रही है। और फिर इराक की धरती पर एक घटना घटी। जैदी जूता और ज़ज्बा जैदी का जूता दुनिया के इतिहास के पन्नों में प्रतिरोध के स्वर को नत्थी कर गया।

बीसवीं शदी का आखिरी दशक और इक्कीसवीं शदी का पहला दशक और इन दो दशकों में घटित घटनायें दुनिया के इतिहास में दर्ज हो चुकी हैं। पूरा वैश्विक परिदृश्य आतंकवाद और आर्थिक मन्दी के इर्द-गिर्द घूम रहा है। मौजूदा समय वैश्विक स्तर पर वैचारिक बहस की माँग करता है। जहाँ बीसवीं शदी साम्यवाद, पूँजीवाद, नाजीवाद के परस्पर द्वन्द्व के रूप में इतिहास के पन्नों में दर्ज हो चुकी है। इतिहास के पन्नों में दर्ज हो चुके हैं दो-दो विश्वयुद्ध और दोनों विश्वयुद्धों के मूल में दुनिया की आर्थिक मन्दी। ब्रिटिश उपनिवेशवाद का अवसान पिछली शदी की बड़ी घटना थी। दो ध्रुवों के बीच विभाजित दुनिया और उनके बीच शीतयुद्ध। और शदी के अन्तिम दशक में साम्यवादी ध्रुव का पतन और पूँजीवादी दुनिया की अगुवाई करता अमरीका। अमरीकी साम्राज्यवाद के अश्वमेध के घोड़े को लगाम लगाने वाली कोई ताकत नहीं बची।

इक्कीसवीं शदी की दुनिया वैश्विक ग्राम में तब्दील हो गई। सीमा बिहीन बाजार व्यवस्था। भोगवादी मुनाफा संस्कृति, उन्मुक्त, उश्रृंखल दुनिया की आवारा पूँजी को खुली छूट। उदारवादी

अर्थव्यवस्था का पूँजीवादी खेल। सूचनाक्रान्ति के औजारों के साथ-साथ पूँजीवादी दुनिया ने प्रायोजित ढंग से इतिहास के अन्त, विचारधारा के अन्त, शब्दों के अन्त, उत्तर आधुनिकता, विखण्डनवाद, उत्तर संरचनावाद और सभ्यताओं की टकराहट जैसी तमाम वैचारिकी को बौद्धिक उत्पाद के रूप में बाजार में उतारने में सफलता हासिल कर ली। सभ्यताओं के युद्ध की हटिंगटन की वैचारिकी ने पश्चिमी एशिया के प्राकृतिक गैस और कच्चे तेल से सम्पन्न मुल्कों पर युद्ध थोपने की खुली छूट दे दी। पहले अफगानिस्तान और फिर आणविक व रासायनिक हथियारों की मौजूदगी के बहाने इराक पर अमरीकी नेतृत्व में पूँजीवादी दुनिया की सेनाओं का हमला।

अफगानिस्तान और इराक पर हमले को न्यायोचित ठहराने के लिए लोकतन्त्र और मानवाधिकार के जुमले को जोर-सोर से प्रचारित व प्रसारित कराया गया। लोकतन्त्र की खाल ओढ़ हिटलर और मुसोलिनी की रूहें अफगानिस्तान और इराक की धरती पर लाखों-लाख मासूमों और बेगुनाहों को मौत के घाट उतारने में अपनी पूरी ताकत का प्रदर्शन करने में कामयाब हुईं। अत्याधुनिक हथियारों से मध्ययुगीन बर्बरता की वापसी का सन्देश पूरी दुनिया को अमरीका ने दिया।

1993 में अमरीकी सरकार की पत्रिका 'फारेन अफेयर्स' में सेमुअल हटिंगटन ने अपने 29 पृष्ठों के लम्बे लेख—'सभ्यताओं की टकराहट' (द क्लैस आफ सिविलाइजेशन्स) के माध्यम से अमरीकी साम्राज्यवाद के विस्तार की प्रक्रिया को वैचारिक जमीन मुहैया करा दी। हटिंगटन की उक्त वैचारिकी 1996 में पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुई। फिर क्या बीसवीं शदी की विचारधाराओं की टकराहट की दुश्मनियों ने इक्कीसवीं शदी में सभ्यताओं की टकराहट का प्रायोजित रूप ले लिया। सभ्यताओं की टकराहट का हटिंगटन का दिया रोड मैप वैश्वीकरण, उदारीकरण, मुक्तबाजार व्यवस्था के बहाने पूँजीवादी दुनिया को लूट की खुली छूट मुहैया कराने का रास्ता साफ कर दिया। मुनाफा संस्कृति का उत्कर्ष और मानवीय मूल्यों के पतन का रास्ता साफ हो गया। बुश ने यहाँ तक ऐलान कर दिया कि जो मुल्क सभ्यताओं के युद्ध में अमरीका के साथ खड़े हैं वे सभ्य हैं और जो अमरीका के प्रतिरोध में खड़े हैं वे असभ्य हैं। यानी असभ्य मुल्कों को सभ्य बनाने की मुहिम में खड़ी पूँजीवादी दुनिया की सैन्यशक्ति। अब तक अफगानिस्तान और इराक को सभ्यता का पाठ पढ़ाया जा चुका है और अब इरान की बारी है। यह जो सभ्यताओं के युद्ध का मुखौटा अमरीका ने हासिल किया है उस मुखौटे के प्रस्तोता हटिंगटन महोदय हैं। इक्कीसवीं शदी हजारों साल से चली आ रही धार्मिक, सांस्कृतिक, जातीय विविधताओं के बीच द्वन्द्व की शदी होती जा रही है। यानी दुनिया की सभ्यताओं के बीच युद्ध की शदी।

हटिंगटन अपनी सभ्यताओं की टकराहट की वैचारिकी में यह स्थापना देते हैं कि "पश्चिमी सभ्यता यानी ईशाई सभ्यता और इस्लामिक सभ्यता के बीच प्रतिद्वन्द्विता होगी। चूँकि पश्चिमी सभ्यता चरमोत्कर्ष पर है, वह स्वभावतः लोकतन्त्र और उदारवाद पर आधारित जीवन मूल्यों को वैश्विक स्तर पर फैलाना चाहेगी। पश्चिम अपने आर्थिक-सैन्यशक्ति का प्रयोग करेंगे। पश्चिम की प्रवृत्ति का अन्य सभ्यतायें प्रतिरोध करेंगी और सबसे प्रबल प्रतिरोध इस्लामिक सभ्यता की तरफ से होगा।"

डॉ. लालबहादुर वर्मा फूकोयामा और सेमुअल हटिंगटन दोनों के ही विचार को भ्रामक और भटकाऊ मानते हैं। उनकी दृष्टि में दोनों ही अमेरिकी वर्चस्व में समाधान की तलाश करते हैं। 'एक सभ्यता आधारित विश्व व्यवस्था' विषमता का वैश्विक विस्तार पश्चिमी सभ्यता यानी अमरीकी साम्राज्य की संजीवनी है।

पश्चिमी दुनिया चाहे जो भी बहाना बना ले। जितनी भी प्रायोजित वैचारिकी को सूचनाक्रान्ति के औजार से प्रचारित-प्रसारित करवा ले, लेकिन इतना तो तय है कि जब तक अन्याय और विषमता का कारगर संश्लेषण-विश्लेषण नहीं किया जायेगा तब तक प्रतिरोध के स्वर लगातार बढ़ते ही जायेंगे। प्रतिरोध के किसी एक केन्द्र को दबाने या कुचलने की कोशिश की जायेगी और पता चलेगा कि अप्रत्याशित रूप से दूसरे कई प्रतिरोध के केन्द्र जन्म ले रहे हैं।

हटिंगटन ने अपनी बौद्धिकी का इस्तेमाल पश्चिमी दुनिया, इस्लामिक दुनिया, हिन्दू दुनिया, बौद्ध दुनिया को अलगाते हुए पश्चिमी दुनिया की श्रेष्ठता को स्थापित करने के लिए किया है। दुनिया के स्तर पर धर्म के प्रति पूर्वाग्रह की सघन होती प्रवृत्ति ने दुराग्रही कट्टर मनोवृत्ति के लिए खाद-पानी का काम किया है। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले एक ही धर्म के अनुयायियों में भिन्नताएँ बहुत हैं, चाहे ईशाइयत हो या इस्लाम। 'एक सभ्यता आधारित विश्व व्यवस्था' की संकल्पना वाया हटिंगटन निरर्थक साबित होगी। सन्दर्भित परिप्रेक्ष्य में विश्व के ख्यातिलब्ध अर्थशास्त्री नोबुल पुरस्कार से सम्मानित अर्मत्यसेन पाकिस्तान और बांग्लादेश के हवाले से कहते हैं कि "एक बांग्लादेशी मुस्लिम केवल एक मुसलमान नहीं है बल्कि वह बंगाली और बांग्लादेशी भी है जिसे अपनी भाषा, अपने साहित्य और अपने संगीत पर गर्व है। गौरतलब है कि बांग्लादेश का पाकिस्तान से अलगाव मजहब पर आधारित नहीं था।"

दुनिया के लोगों की पहचान सिर्फ धर्म नहीं हुआ करता बल्कि उसके अलावा बहुत सी वजहें होती हैं जिससे पहचाने जाने की बात सामने आती है। राष्ट्रीयता, स्थानीयता, पेशा, वर्ग, सामाजिक स्तर, भाषा, बोली, पहनावा, रस्म-रिवाज, खान-पान, कला-संस्कृति, राजनीति और भी बहुत सारे कारण हो सकते हैं। एक ध्रुवीय दुनिया होने के बाद वैश्विक स्तर पर धार्मिक कट्टरता में तेजी आयी है। जिसकी शुरुआत अफगानिस्तान से सोवियत फौजों को हटाने की कूटनीतिक अमरीकी चाल से होती है जहाँ तोरा-बोरा की पहाड़ियों में अत्याधुनिक हथियारों से सुसज्जित बंकरों में ओसामा बिन लादेन आतंकवादियों की मजबूत कतारें खड़ी करता है। लादेन की प्रभावी ताकत के आगे सोवियत फौजों को अफगानिस्तान से हटना पड़ता है लादेन की उस ताकत के पीछे अमरीकी पूँजी और अत्याधुनिक टेक्नालाजी काम कर रही थी। सोवियत पतन के बाद जब वही लादेन अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ जेहाद की शृंखला के साथ तन कर खड़ा होता है तब अमरीका और उसके हिमायती मुल्कों के लिए आतंकवाद चुनौती के रूप में दिखाई पड़ता है। आज इक्कीसवीं शदी के प्रथम दशक में सारी दुनिया आतंकवाद के खतरे से जूझ रही है। आज ओसामा बिन लादेन मिथक बन चुका है।

दिलचस्प बात तो यह है कि उन्नीसवीं शताब्दी में पश्चिमी दुनिया के राजाओं द्वारा उनकी सत्ता व्यवस्था के विरुद्ध खड़ी होने वाली प्रतिरोधी ताकतों को दबाने, कुचलने और भयाक्रान्त करने के मंसूबे से राजाओं द्वारा जो दमनात्मक कार्यवाही की जाती थी, राजाओं द्वारा की गई उस

कार्यवाही के लिए टेररिस्ट (आतंकवादी/दहशतगर्द) शब्द का इस्तेमाल किया जाने लगा। मौजूदा समय में उक्त कार्यवाही आतंकवादियों द्वारा विश्व की शीर्ष सत्ता व्यवस्था और उनके हिमायती मुल्कों को लक्ष्य करके की जा रही है। 1990 से 2008 के बीच का समय वैश्विक स्तर पर आतंकवादी गतिविधियों के लगातार बढ़ते जाने का समय है।

फीलस्तीनी मुक्ति संघर्ष और 'हमास' की कार्यवाही को इस्लामिक और यहूदी टकराहट के रूप में लगातार प्रक्षेपित किया जाता है जब कि यह टकराहट राजनीतिक अस्तित्व और स्थापना की बुनियाद पर खड़ी है। इजराइल जो भी कर रहा है अमरीका के प्रत्यक्ष या परोक्ष समर्थन से कर रहा है। अफगानिस्तान और इराक पर थोपा गया भयानक युद्ध ईशाइयत और इस्लाम का युद्ध नहीं था बल्कि इन देशों की धरती के नीचे बह रहे तरल सोने (पेट्रोल) और प्राकृतिक गैस के विशाल भण्डार हैं जो अब अमरीकी कम्पनियों के हवाले हो चुके हैं। अफगानिस्तान और इराक के बाद अब ईरान अमरीका के निशाने पर है। तो फिर पश्चिमी एशिया में अमरीकी सेनाओं की कार्यवाही दुनिया के सबसे ताकतवर राजा की कार्यवाही नहीं है? क्या दुनिया के पैमाने पर अपनी ताकत का अहसास कराकर प्रतिरोधी ताकतों को कुचलने, दबाने और गुलाम बनाने की कार्यवाही पश्चिमी दुनिया की नियति नहीं है। क्या इक्कीसवीं शदी के बढ़ते वैश्विक आतंकवाद की जड़ में अन्तराष्ट्रीय राजनीति प्रमुख कारण नहीं है? वैश्विक राजनीति का केन्द्रीय पक्ष आज अमरीका बन चुका है।

अमरीकी साम्राज्यवाद के विस्तार के साथ-साथ आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक कारणों से दुनिया के स्तर पर धार्मिक कट्टरता और आतंकवाद का विस्तार हुआ है। 1990 से 2008 के बीच की अवधि में वैश्विक परिदृश्य में जो बदलाव आया है, वह बदलाव एक ध्रुवीय पूँजीवादी अमरीकी साम्राज्यवादी नीतियों की उपज है, आकर्षक बाजार व्यवस्था, भोगवादी मनोवृत्ति में इजाफा, बढ़ती मुनाफाखोर प्रवृत्ति और मत्स्य न्याय की अवधारणा की बढ़ती वैधानिकता।

इक्कीसवीं शदी के पहले ही दशक में पूँजीवाद की पोल खुल गयी। दो शताब्दियों के संक्रमण के दो दशक पहले दहशतगर्दी और उसके बाद उससे भी खतरनाक दुनिया की आर्थिक मन्दी से जूझते हुए बीतने को हैं। मन्दी की सबसे अधिक मार अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन पर पड़ी है साथ ही इनके अनुगामी मुल्क भी आर्थिक मन्दी की गिरफ्त में आ चुके हैं। पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था मन्दी के गर्त में लुढ़कती जा रही है। बैंक दिवालिये होते जा रहे हैं, कम्पनियाँ बन्द होती जा रही हैं, लाखों-लाख नौकरियों से बाहर किये जा रहे हैं। रोजगार के दरवाजे एक-एक कर बन्द होते जा रहे हैं। पूरी दुनिया आर्थिक मन्दी की गिरफ्त में आ चुकी है। हमें याद रखना चाहिए कि बीती शती के दोनों विश्वयुद्ध के पहले आर्थिक मन्दी की मार पड़ी थी। मन्दी के बाद विश्वयुद्ध से दुनिया को गुजरना पड़ा था। तो क्या मौजूदा आर्थिक मन्दी तीसरे विश्वयुद्ध होने का संकेत तो नहीं हटिंगटन के सभ्यताओं के युद्ध की वैचारिकी, और आर्थिक मन्दी के बढ़ते स्त्रोत को तृतीय विश्वयुद्ध की पूर्व पीठिका के रूप में देखा जाना चाहिए।

दुनिया के वे देश जो अमरीकी पूँजीवादी साम्राज्यवादी व्यवस्था को आत्मसात करते हुए जैसे-जैसे एकीकरण की दिशा में बढ़ते जायेंगे, उसकी वैश्विक रणनीति का हिस्सा बनते जायेंगे, वैसे-वैसे अमरीकी संकट के हर पहलू का अपने देश में आयात करते जायेंगे। यानी आर्थिक मन्दी